अभिलेख शास्त्र के क्षेत्र में विद्वानों का योगदान

जेम्स प्रिंसेप (1799 ईस्वी–1844 ईस्वी)

ईस्ट इंडिया कंपनी के अधिकारी जेम्स प्रिंसेप 1832 ईस्वी से 1840 ईस्वी तक कलकत्ता की टकसाल के अधिकारी रहे। 1818 ईस्वी में Asiatic Society of Bangal के प्रथम सचिव प्रिंसेप ने दिल्ली, कहोम, एरन, सांची, गिरनार तथा अमरावती के गुप्तकालीन अभिलेखों को पढ़कर अक्षरों की पूर्ण सूची तैयार की। 1837 ईस्वी में सांची की वेदिका तथा द्वार स्तम्भों के छोटे-छोटे लेखों की प्रतिचित्रणों को एकत्र करके प्रारंभिक ब्राह्मी को पढ़ने का सफल प्रयास किया। सांची के कुछ दान लेखों में 'दानं' शब्द के अक्षरों को पहचाना। तत्पश्चात् ब्राह्मी लिपि की लगभग संपूर्ण वर्णमाला का उद्घाटन किया। प्रिंसेप ने 'Modification of sanskrit Alphabets from 528 BC to 1200 AD' के नाम से एक चार्ट बनाया। जिसमें 1800 वर्णों की संपूर्ण भारतीय वर्णमाला प्रस्तुत की। प्रिंसेप के इस चार्ट के साथ पुरालिपि शास्त्र के अध्ययन के इतिहास में महत्त्वपूर्ण कार्य हुआ। इसके पश्चात् प्रिंसेप ने भारतीय अभिलेखों के अध्ययन का कार्य प्रारम्भ किया। ब्राह्मी लिपि और प्राकृत भाषा में उत्कीर्ण अशोक के अभिलेखों को सर्वप्रथम पढ़ने का श्रेय जेम्स प्रिंसेप को जाता है। खरोष्ठी लिपि के

Scanned with CamScanner

स्पष्टीकरण (पढ़ने) में भी जेम्स प्रिंसेप का योगदान रहा। एकत्रित किए गए अभिलेखों को विभिन्न पत्रिकाओं में प्रकाशित किया जिनमें Journal of Asiatic Society of Bangal, Asiatic Researches, Indian Antiquary, Ancient India, भारतीय विद्या आदि पत्रिकाएं प्रमुख है। रुद्रदामन् का गिरनार अभिलेख तथा खारवेल का हाथीगुंफा अभिलेख प्रिंसेप ने Journal of Asiatic Society of Bangal में प्रकाशित किए। प्रिंसेप की ब्राह्मी लिपि के स्पष्टीकरण की खोज से भारतीय पुरातत्त्व में एक नए अध्याय का प्रारम्भ हुआ। ब्राह्मी वर्णों की एक पूर्ण व वैज्ञानिक सूची तैयार होने से भारत के प्राचीनतम अभिलेखों को पढ़ना संभव हो गया।

सर एलेग्जेंडर कनिंघम (1814 ईस्वी-1893 ईस्वी)

कनिंघम 1848 ईस्वी में ब्रिटिश सेना के इंजिनियर पद पर नियुक्त होकर लंदन से भारत आए थे। भारतीय इतिहास व पुरातत्त्व में इनकी विशेष रुचि थी। भारतवर्ष के पुराने खंडहरों तथा प्राचीन स्थानों के सम्बन्ध में अन्वेषण करने के लिए एक पदाधिकारी की नियुक्ति की योजना बनाई गई। वह व्यक्ति भारत के धर्म, कला तथा अन्य पुरातत्त्व विषयों को जानने वाला होना चाहिए था। भारत के प्रथम गवर्नर जनरल लॉर्ड कैनिंग (1856-1862 ईस्वी) ने पुरातत्त्व विभाग की स्थापना की तथा कनिंघम इस विभाग के डायरेक्टर जनरल चुने गए। कनिंघम ने 1862- 1865 ईस्वी तक इस पद पर कार्य किया। इन्हें 1871 ईस्वी में पुन: पुरातत्त्व विभाग का सर्वोच्च पदाधिकारी नियुक्त किया गया। कनिंघम ने मध्य भारत के बौद्ध स्मारकों को खोजा। 1860 ईस्वी में भारतीय पुरातत्त्व विभाग में प्रशासकीय और अप्रशासकीय स्तर पर अभिलेखों के संग्रह की चर्चा हुई। कनिंघम ने अभिलेखों को एकत्रित करने की योजना बनाई। 1877 ईस्वी में Corpus Inscriptionum Indicarum के प्रथम खंड में अशोक के अभिलेखों का प्रकाशन किया। भारतीय पुरातत्त्व विभाग की पत्रिका में विभिन्न अभिलेखों तथा शोधपत्रों का प्रकाशन किया। खरोष्ठी लिपि व प्राकृत भाषा के तख्तेबाही अभिलेख, (पाकिस्तान में) कनिष्ककालीन ताम्रपट्ट अभिलेख (पाकिस्तान में प्राप्त), ब्राह्मी लिपि व संस्कृत भाषा में उत्कीर्ण चन्द्रगुप्त द्वितीय तथा कुमारगुप्त के अभिलेख प्रकाशित किए। खरोष्ठी वर्णमाला को पूर्ण करने में तथा खरोष्ठी लिपि के स्पष्टीकरण में कनिंघम का विशेष योगदान रहा। कनिंघम के मत में आर्य पुरोहितों ने स्वदेशीय भारतीय बीजाक्षरों के द्वारा ब्राह्मी लिपि की वृद्धि की। 19वी शताब्दी के अंतिम दशक में कनिंघम पुरालिपि सामग्री का अध्ययन करने में संलग्न थे। इन्होंने समस्त भारत का भ्रमण कर पुरातत्त्व सम्बन्धी रिपोर्ट प्रस्तुत की। कनिंघम ने प्राचीन भारत में आने वाले यूनानी व चीनी यात्रियों के भारतविषयक वर्णनों का अनुवाद तथा संपादन बड़ी विद्वता व कुशलता से किया।

Scanned with CamScanner

भारतीय पुरातत्त्व, इतिहास और भूगोल के विद्वान् के रूप में प्रसिद्ध कनिंघम को भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण विभाग का जनक माना जाता है। 1861 ईस्वी में मेजर जनरल के पद से सेवानिवृत्त हुए। कनिंघम ने अनेक पुस्तकों की रचना की। कुछ प्रमुख पुस्तकें इस प्रकार हैं–

The Ancient Geography of India (1871 ईस्वी)

The Book of Indian Eras (1883 ईस्वी)

Coins of Ancient India (1891 ईस्वी)

जॉर्ज ब्यूलर (1837-1898 ईस्वी)

जॉर्ज ब्यूलर पैरिस, ऑक्सफोर्ड, लंदन आदि के बृहद् भारतीय पोथियों के संग्रहों का अध्ययन व अनुशीलन करने के पश्चात मैक्समूलर (जर्मनी के संस्कृत विद्वान्) की प्रेरणा से भारत आए। शिक्षा विभाग बम्बई में नियुक्त होते ही सरकार की ओर से संस्कृत के पंडितों के हितार्थ सर्वप्रथम इन्होंने 'बम्बई संस्कृत सीरीज़' नामक ग्रंथ माला का प्रकाशन प्रारम्भ किया। पैरिस, लंदन, ऑक्सफोर्ड में ही प्राच्य भाषाओं, पुरातत्त्व और संस्कृत भाषा का अध्ययन किया। इन्हें ग्रीक, लैटिन, फारसी, आरमेनियन तथा अरबी भाषा का ज्ञान था। इनके जीवन का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण भाग भारतीय हस्तलिखित पोथियों की खोज करने में व्यतीत हुआ। इन्होंने 5000 से अधिक पोथियों (manuscipts) को खोजा। 1866 ईस्वी में सरकार की ओर से बंगाल, बम्बई, मद्रास शोध संस्थान स्थापित हुए तथा ब्यूलर को बम्बई शाखा का अध्यक्ष नियुक्त किया गया। ब्यूलर द्वारा खोजी गई पोथियां एलफिंसटन कॉलेज (बम्बई) पुस्तकालय में, कुछ बर्लिन विश्वविद्यालय में तथा शेष इंडिया ऑफिस लंदन में सुरक्षित हैं। एलफिंसटन कॉलेज, बम्बई में प्राच्य भाषाओं के प्रोफेसर के रूप में कार्यरत रहे।

पुरालिपि विषयक ब्यूलर की प्रसिद्ध पुस्तक मूल रूप से Indische palaeographie (Indian Palaeography) 1896 ईस्वी में जर्मन भाषा में प्रकाशित हुई। 1966 ईस्वी में इस पुस्तक का हिंदी अनुवाद 'भारतीय पुरालिपि शास्त्र' के नाम से मंगलनाथ सिंह ने किया। इस पुस्तक में 350 ईसापूर्व से लगभग 1300 ईस्वी तक की लिपियों को एक स्थल पर संगृहीत किया गया है। भारतीय पुरालिपि के क्षेत्र में प्राय: 100 वर्षों के अध्ययन के चरमोत्कर्ष के दर्शन इस पुस्तक में होते हैं। ब्राह्मी लिपि के वर्णों की संपूर्ण वैज्ञानिक तालिका बनाने का श्रेय ब्यूलर को ही जाता है। इन्होंने 1878 ईस्वी में प्राचीनतम प्राकृत शब्दकोष का अनुवाद किया। 1895 ईस्वी में On the Origin of Kharoshthi Alphabets पुस्तक लिखी। इसके अतिरिक्त Epigraphia Indica, Archaeological Servey of West Bangal, Indian

REDMI NOTE 5 PRO
MI DUAL CAMERA

Scanned with CamScanner

Antiquary पत्रिकाओं में अभिलेखों और शोधपत्रों का प्रकाशन व संपादन किया। ब्यूलर ने एक अभिलेखशास्त्री के रूप में भारतीय अभिलेखों का विशेष अध्ययन किया।

John Faithful Fleet (1847- 1917 AD)

जॉन फेथफुल फ्लीट (1847 ईस्वी- 1917 ईस्वी)

प्रसिद्ध अभिलेखशास्त्री फ्लीट इतिहासकार और भाषा वैज्ञानिक के रूप में भी जाने जाते हैं। फ्लीट ने भारतीय प्रशासनिक सेवा (Indian Civil Service 1865 ईस्वी) परीक्षा उत्तीर्ण कर Assistant Collector तथा मजिस्ट्रेट के पदों पर कार्य किया। यूनिवर्सिटी कॉलेज लंदन में संस्कृत भाषा का अध्ययन किया। पालि व कन्नड़ भाषाओं का भी भाषा वैज्ञानिक अध्ययन किया। 1876 ईस्वी में संस्कृत अभिलेखों तथा कन्नड़ी अभिलेखों की श्रृंखला Journal of Bombay Branch of Royal Asiatic Society में प्रस्तुत की। 1883 ईस्वी में भारत सरकार ने आपको प्रथम अभिलेखशास्त्री का कार्य सौंपा। पुरातत्त्व क्षेत्र में विशिष्ट योगदान के कारण 1886 ईस्वी में भारतीय पुरातत्त्व विभाग (Archeological Servey of India) में प्रथम अभिलेखवेत्ता के रूप में नियुक्त किए गए। 1888 ईस्वी में (Corpus Inscriptionum Indicarum) कार्पस इन्सक्रिपंशनम इन्डिकरम के खंड तीन का संपादन किया। जिसमें प्रारंभिक गुप्त राजाओं तथा उनके उत्तराधिकारियों के अभिलेख विद्यमान है। गुप्तवंश के कालनिर्धारण में फ्लीट का विशेष योगदान रहा।

अभिलेखविषयक अनेक शोध पत्रों का संपादन Indian Antiqury, Epigraphia Indica, Indian Epigraphy इत्यादि पत्रिकाओं में किया।

JRAS में (Journal of Royal Asiatic Society) में पिप्रावा अस्थिकलश, खारवेल का हाथीगुंफा अभिलेख तथा अशोक का सप्तम स्तम्भ अभिलेख प्रकाशित किए। 1897 ईस्वी में भारतीय प्रशासनिक सेवा से सेवानिवृत्त होकर इग्लैंड वापिस चले गए।

रायबहादुर गौरीशंकर हीराचंद ओझा (1863 ईस्वी-1947 ईस्वी)

हिंदी लेखक और इतिहासकार गौरीशंकर हीराचंद ओझा का भारतीय पुरालिपि के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण योगदान है। राजस्थान के इतिहासकार ओझा ने 'मध्यकालीन भारतीय संस्कृति', प्रसिद्ध इतिहासकार 'कर्नल जेम्स टॉड का जीवन चरित' आदि पुस्तकों की रचना की। 1927 ईस्वी में अखिल भारतीय हिंदी साहित्य सम्मेलन के अधिवेशन में आपको 'महामहोपाध्याय' की उपाधि से सम्मानित किया गया। ओझा द्वारा विरचित 'भारतीय प्राचीन लिपिमाला' हिंदी भाषा में लिखी गई प्रथम पुस्तक है जिसका सभी भारतीय तथा विदेशी विद्वानों ने लाभ उठाया। यह पुस्तक राजपूताना म्यूजियम अजमेर

REDMI NOTE 5 PRO
Scanned with CamScanner

REDMI NOTE 5 PRO
MI DUAL CAMERA

मे 1894 ईस्वी में प्रकाशित हुई। इसका संशोधित संस्करण 1918 ईस्वी में प्रकाशित हुआ। लेखक ने प्रथम बार एक स्थान पर समस्त भारतीय लिपियों का सुसंबद्ध अध्ययन किया। लेखन कला की प्राचीनता, ब्राह्मी व खरोष्ठी आदि लिपियों की उत्पत्ति तथा प्राचीन लिपियों के पढ़े जाने के इतिहास सदृश महत्त्वपूर्ण विषयों को स्पष्ट किया। ब्राह्मी, खरोष्ठी, गुप्त, बंगला, नागरी आदि समस्त भारतीय लिपियों को 84 लिपिपत्रों के द्वारा प्रस्तुत किया। वर्णों के विकासक्रम तथा वर्णमाला परिचय से अभिलेखों का गठन सरल हो गया। ब्राह्मी व उससे निकली हुई लिपियों के अंकों की बनावट के परिवर्तन को अति स्पष्ट रूप से प्रदर्शित किया है। विद्वानों का कहना है कि लेखक ने अभिलेखों की सहायता से अपने हाथ से ही उनकी प्रतिलिपि ली थी। भारतवर्ष में प्रचलित लगभग 34 संवतों का सूक्ष्म विवेचन विशेष महत्त्वपूर्ण है।

दिनेश चन्द्र सरकार (1907 ईस्वी- 1984 ईस्वी) (डी०सी० सरकार)

डॉ० सरकार एक बहुश्रुत विद्वान् तथा सफल लेखक थे। अभिलेखशास्त्री और इतिहासकार डॉ० सरकार ने भारत और बंगलादेश के अभिलेखों को पढ़ा। 1955 ईस्वी से 1961 ईस्वी तक भारत सरकार द्वारा अभिलेखशास्त्री के रूप में नियुक्त किए गए। आर्क्योजिकल सर्वे ऑफ इंडिया (1949 ईस्वी 1962 ईस्वी) के मुख्य अभिलेखशास्त्री के रूप में कार्य किया। कलकत्ता में प्राचीन भारतीय इतिहास व संस्कृति के प्रोफेसर रहे (1962-1972 ईस्वी)। सर विलियम जोंस मेमोरियल से सम्मानित किए गए। आपने बंगला और अंग्रेजी में लगभग 40 पुस्तकों की रचना की। दो खंडों में Select Inscriptions की रचना की।

Vol- I Sixth century BC to Sixth century A.D

Vol- II Sixth to eighteen century A.D

ये पुस्तके उत्कृष्ट कोटि की अभिलेख संग्रह हैं। अभिलेखों का संपादन लेखक ने ऐतिहासिक एवं विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया है। Indian Epigraphical Glossary, Inscriptions of Ashoka, Indian Epigraphy, Studies in Indian Coins इत्यादि पुस्तकें अभिलेख, इतिहास तथा पुरातत्त्व के अध्ययन की दृष्टि से अत्यंत उपयोगी है। मध्य एशिया, सिलोन, बर्मा, इंडोनेशिया, कंबोडिया आदि देशों में प्राप्त भारतीय अभिलेखों का परिचय प्रस्तुत किया। Indo Muslim Epigraphy, अभिलेखों में प्रयुक्त भाषाएं, लेखनसामग्री, अभिलेखों के प्रकार, विभिन्न संवतों का उल्लेख, तथा तिथिअंकन पद्धति आदि विषयों का सूक्ष्म व विश्लेषणात्मक विवेचन प्रस्तुत किया। प्राचीन भारतीय इतिहास के पुनर्निमाण में अभिलेखों के महत्त्व को पाठकों के समक्ष रखा।

• • •

Scanned with CamScanner